SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. 2nd year SESSION – 19-21

SUBJECT - Understanding the Self (EPC-4)

TOPIC NAME – शिक्षक की अस्मिता को प्रभावित करने वाले कारक

DATE - 28.06.21

⇒ शिक्षक की अस्मिता को प्रभावित करने वाले कारक –

शिक्षक की अस्मिता को प्रभावित करने वाले कारक निम्न है –

1. व्यक्तिगत अस्मिता – व्यक्तिगत अस्मिता को एक अध्यापक के जीवन, अनुभवो, मान्यताओ अथवा मूल्यो एवं क्रियाकलापों के संदर्भ में समझा गया है। एक अध्यापक का जीवन यात्रा मात्र विद्यालय तक सीमित नहीं रहता बल्कि उसके जीवन में कई ऐसे अनुभव या कई अन्य बाते, घटनाए हो सकती है जिससे उसका विद्यालयी जीवन प्रभावित होता है। व्यक्तिगत अस्मिता को समझना इसलिए आवश्यक हो जाता है क्योकि किसी व्यक्ति के व्यवहारो के आकार देने में इनका विशेष योगदान होता है।

2. सामाजिक अस्मिता :- समाज अथवा समुदाय के द्वारा एक अध्यापक के कार्य को दी जाने वाली प्रतिष्ठा एवं महत्व को सामाजिक अस्मिता के रूप में समझा जा सकता है। यह अस्मिता भी स्वत: प्राप्त नहीं होती बल्कि इसके लिए अध्यापक को अपने कार्यों के द्वारा समाज अथवा समुदाय को विश्वास में लेना पड़ता है। जो काफी कठिन है।

विभिन्न सामुदायिक स्थानों पर किए गए शोधों से यह निकल कर आता है कि सामुदायिक हित में चलाए जाने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों के प्रति शुरूआत में समुदायों का काफी विरोधात्मक व्यवहार रहा है। यहाँ एक अध्यापक की सामाजिक अस्मिता सक्रिय भूमिका निभाती है।

3. सांस्कृतिक अस्मिता : सांस्कृतिक अस्मिता का अर्थ है हमारी संस्कृतिक पहचान अर्थात् हमारे जीने, खान-पान, रहन-सहन, सोचने-विचारने के तौर-तरीके जो हमें दूसरों से अलग करते हैं तथा जिनसे हमारी विशिष्ट पहचान बनी है। हमारी अपनी परम्परा से प्राप्त संस्कार इसका चरित्र बनाते हैं। किसी भी नगर या राष्ट्र की सांस्कृतिक अस्मिता की बात जब की जाती है तो उस नगर या राष्ट्र के लोगों के जीने के ढंग और उसके पीछे काम कर रही दृष्टि है।

4. राजनैतिक अस्मिता : भारतीय जनतंत्र में अस्मिता की राजनीति का प्रभाव काफी समय से रहा है। पिछले कुछ वर्षों में ऐसा लगने लगा था कि शायद इसका युग अब समाप्त हो जाएगा। लेकिन अब इसके विकृत रूप के उभार की संभावनाएं बढ़ती दिख रही हैं। अस्मिता पर आधारित राजनीति का स्वरूप बदल रहा है। उसमें भी हिंसा का अंश बढ़ रहा है। यह एक खतरनाक भविष्य की ओर इंगित कर रहे हैं।

5. आर्थिक अस्मिता :- आर्थिक अस्मिता किसी व्यक्तियों के समूह आबादी के समूहों या देशों के बीच, स्थित आर्थिक अंतर की दर्शाता है। अर्थशास्त्री आम तौर पर आर्थिक अस्मिता हेतु तीन मापीय प्रणाली पर ध्यान केंद्रित करते हैं। धन, आय और खपत।

⇒ शिक्षक की अस्मिता संबंधी सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य :-

यदि विद्यालय अपने अध्यापकों की परिस्थिति को समझे, उनके तनाव के कारणों पर चर्चा करें, उसके निवारण में उनकी मदद करे तो विद्यालयी वातावरण स्वयं ही सौहार्दपूर्ण होने लगेगा। अतः अध्यापकों के अनुभवों को समझना चाहिए। यदि उन्हें एक उत्तम पेशेवर के रूप में विकसित करना है तो। अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों में पेशेवर कौशल के साथ-साथ एक अध्यापक के विशिष्ट अनुभवों एवं विचारों के लिए विस्तृत स्थान होना चाहिए। अपने तनाव से एक शिक्षक तभी उबर सकता है जब उसे विशेष महत्व एवं अवसर दिए जाए तथा उनके मनोबल को बढ़ाया जाए।

'अस्मिता' की संकल्पना को समझने के लिए मूलतः इसे तीन प्रमुख आयामों में बाँट सकते हैं —

1. व्यक्तिगत आयाम
2. पेशेवर आयाम
3. सामाजिक आयाम

1. व्यक्तिगत आयाम :- व्यक्तिगत अस्मिता को एक अध्यापक के जीवन-अनुभवों, मान्यताओं अथवा मूल्यों व क्रियाकलापों के संदर्भ में समझा गया है। एक अध्यापक का जीवन मात्र विद्यालय तक सीमित नहीं रहता बल्कि उसके जीवन में कई ऐसे अनुभव अथवा घटनाएं हो सकती है जिनसे उसका विद्यालयी जीवन प्रभावित हो सकता है। अत: व्यक्तिगत अस्मिता की समझ होनी आवश्यक है, यदि एक अध्यापक के व्यवहार को सम्पूर्णता में समझना हो तो।

2. पेशेवर आयाम :- अध्यापक के पेशेवर अस्मिता को उसके शिक्षा अभिक्षमता, कार्य-स्थल के माहौल, रूचि लक्ष्यों के संदर्भ में समझा जा सकता है। एक अध्यापक की पेशेवर अस्मिता काफी प्रभाव होती है। क्योंकि उसके कार्य को अभिलक्षित करती है। पेशेवर अस्मिता का विकास लगातार चलता रहता है। जो विभिन्न कारकों जैसे विद्यालय, समाज, राजनीति आदि से प्रभावित होता रहता है।

3. सामाजिक आयाम :- समाज के द्वारा एक अध्यापक के कार्य को दी जाने वाली प्रतिष्ठा एवं महत्व को सामाजिक अस्मिता के रूप में समझा जा सकता है। यह अस्मिता भी स्वत: प्राप्त नहीं होती, बल्कि इसके लिए अध्यापक को अपने कार्यों के द्वारा समाज को अपने विश्वास में लेना पड़ता है जो काफी कठिन है। समाज के लोगों का शैक्षिक कार्यक्रम काफी विरोधात्मक व्यवहार रहा है। अध्यापकों एवं स्वयंसेवी संस्थानों के अथक प्रयास के द्वारा उनके विचारों में परिवर्तन लाया गया।